निर्देशक जे पी दत्ता से बातें हुईं। उन्होंने बताया कि किस तरह बचपन की स्मृति उनके लिए अपनी मां के स्पर्श और आकाशवाणी के सिग्नेचर म्यूजिक की ध्वनि से जुड़ी हुई है। आकाशवाणी की संकेत धुन, जिसे वॉल्टर कॉफमैन ने बनाया था- उसकी आवाज़ उनके जीवन में कितनी मायने रखती है। फिर वो एकदम बचपन की यादों में खो गये। स्कूल का समय होना, रेडियो की आवाजों के साथ वक्त का अहसास। इसी तरह की यादें संजय लीला भंसाली ने भी बांटी थीं। उन्होंने तो बताया था कि उन्हें सिनेमा से जोड़ा ही विविध भारती ने था। अचरज होता है ये जानकर कि ये सभी नामी हस्तियां किस कदर सादा मिज़ाज हैं। और किस तरह उनकी पुरानी यादें हममें से बहुत लोगों की यादों से अलग नहीं हैं। अभिनेता जैकी श्रॉफ से तो जब भी मुलाक़ात होती है तो पुराने गानों पर हमारा लंबा डिस्कशन होता है। जैकी बताते हैं कि बचपन में जब वो 'चार रास्ता' वाले इलाके की एक चॉल में रहते थे तो किस तरह मां रात को रेडियो लगाकर उन्हें बिस्तर पर लिटा देती थी। और किस तरह 'छायागीत' और 'भूले बिसरे गीत' उनकी जिंदगी का हिस्सा बन गये।

जब अभिनेत्री तब्बू से मुलाक़ात का दिन आया तो रास्ते में ही ये अहसास हुआ कि उन्होंने प्रश्नावली लेकर आने को कहा था और आदतन मैंने प्रश्नावली लिखी नहीं है। वो तो मेरे ज़ेहन में है। मेरा मानना है कि काग़ज सामने रखने से इंटरव्यू अक्सर ही मेकेनिकल या यांत्रिक हो जाता है। बातचीत में वो सहजता और प्रवाह नहीं रहता। बहरहाल.. अब तो कोई तरीक़ा नहीं था। सीधे तब्बू के पास पहुंचे। पता चला कि वो वीडियो लाइब्रेरी वाले के साथ बैठी हैं और फुरसत के पलों के लिए डीवीडी चुन रही हैं। बस बातों का सिलसिला चल पड़ा, पर उन्हें याद था कि उन्होंने सवाल लेकर आने को कहा था। मुझे लगा कि कहीं इंटरव्यू कैंसल ना हो जाए इस बात पर। मैंने उनसे बड़ी सहजता से कहा कि ऐसा कोई सवाल नहीं होगा, जिसका आप जवाब ना देना चाहें। फिर क्या था बातों का सिलसिला चल पड़ा और तब्बू तो रेडियो की शौकीन निकलीं। उन्होंने बताया किस तरह वो आज भी रेडियो सुनती हैं। हैदराबाद के उनके घर में लगातार रेडियो चलता ही रहता था। और विविध भारती उनका पसंदीदा चैनल हुआ करता था, आज भी है। बस फिर तो बातें बस चलती ही चली गयीं।

इसी तरह एक और बड़ी मजेदार याद है। अभिनेत्री शबाना आज़मी और उनके भाई और मशहूर सिनेमेटोग्राफर बाबा आज़मी का इंटरव्यू किया जाना था। मौक़ा था दीवाली के दिनों में भाई दूज का। और इंटरव्यू का मुद्दा था भाई बहन की बचपन की शरारतें। शबाना से पहले भी बातें हुई थीं। तब उन्होंरने फिल्म संसार में अपने पच्चीस साल पूरे किये थे। और जाहिर है कि बातचीत काफी औपचारिक सी हुई थी। लेकिन भाई दूज के मौक़े पर सामने आया उनका शरारती रूप। उन्होंने बताया कि बचपन में एक बार नदीम ने चीकू खाते वक्त उसका बीज भी खा लिया। अब शबाना उन्हें डराने लगीं कि तुम्हारे पेट में चीकू का पेड़ उग जायेगा। नदीम डर गये। किसी तरह सोए तो शबाना ने बाहर से चीकू की एक डाली तोड़कर उनके मुंह में लगा दी। सुबह जब नदीम उठे तो शबाना ने कहा, देखा कहा था ना कि चीकू का पेड़ उग जायेगा। नदीम का रोते रोते बुरा हाल हो गया और घर के सब लोग खूब हंसे। ये बात सुनकर जाहिर है कि हमारे श्रोता भी खूब हंसे होंगे।

फिल्म अभिनेता जॉन अब्राहम से मुलाक़ात उनके कंपाउंड के उस कांच के कमरे में हुई जिसके चारों तरफ छतनार बगीचे की हरियाली बिखरी थी और पेड़-पौधे थे। जॉन बहुत ही नायाब शख्सियत हैं। बाईक्स का उनका शौक़ किसी से छिपा नहीं है। जब बाइकिंग की बातें चल रही थीं तो मैंने उनसे कहा कि हेलमेट लगाने की आदत युवाओं के बीच बढ़े, इस पर कुछ कह दीजिए। उन्होंने अपने जीवन की एक घटना से जोड़कर इस तरह उसे दिलचस्प बना दिया कि बात एकदम प्रभावी हो गई। हमने बातचीत के उस अंश को 'सड़क सुरक्षा' के एक प्रोमो में बदल दिया ताकि किसी तरह युवाओं में बदलाव आए।

हाल में निर्माता निर्देशक राकेश ओमप्रकाश मेहरा से बातचीत हुई, तो वो कुछ इस तरह खुले कि उन्होंने जीवन के कुछ अनछुए पहलुओं को उजागर कर दिया। बताया कि किस तरह से वो एक कंपनी के लिए घर-घर जाकर वैक्यूम क्लीनर्स बेचा करते थे। वहां से सिनेमा की दुनिया में किस तरह उन्होंने हौले-हौले क़दम बढ़ाए- वो जानना बहुत ही कमाल का था।

आमिर ख़ान से कई मुलाक़ातें हुई हैं। बहुत शुरूआत में ही उन्होंने स्पष्ट कर दिया था कि आकाशवाणी का पूरा नेटवर्क उनके स्टारडम से बड़ा है इसलिए वो नहीं चाहेंगे कि हम उन्हें आमिर जी कहें। इसलिए सारे इंटरव्यू में हम उन्हें 'आमिर' कहते हैं और वो नाम के आगे 'जी' संबोधन लगाकर बात कहते हैं। अजीब लगता है पर ऐसा ही है। 'सत्यमेव जयते' के रेडियो शोज़ के दौरान एक बार मैंने आमिर से कहा कि क्यों ना हम आपके चाचा नासिर हुसैन की यादें आपके पूरे परिवार के साथ बांटें। आमिर को ये आयडिया बहुत पसंद आया और उन्होंने कहा कि इसे ज़रूर करेंगे। इस बात को शायद तीन चार बरस बीत गए होंगे। पर नासिर हुसैन की याद के दिन उन्होंने सारे परिवार को जमा किया और विविध भारती को एक एक्सलूसिव इंटरव्यू दिया, जिसमें नासिर साहब से जुड़ी तमाम यादें और दिलचस्प घटनाएं थीं। कितनी कितनी यादें हैं तमाम कलाकारों से जुड़ी हुई। आज जब लिखने बैठा हूं तो यादों के सितारे चमक उठे हैं। फिर कभी इसी तरह की कुछ और यादें आपसे बांटूंगा। ■